Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

रामचरितमानस में जीवन मूल्य

मुंडे डी. □.

एल.बी.पी. महिला कॉलेज, सोलापूर .

सारांश –

विश्व में मूल्य का प्रमुख स्त्रोत धर्म रहा हैं। धर्म जीवन मूल्यों के प्रति आस्था निर्मा□ □र □ राह प्रशस्त करता है। वास्तव में मूल्य □ा प्रारंभ परिवार से होता हैं। मनुष्य परिवार □ बाहर □ाँव, प्रांत, देश आदि का अविभाज्य घटक बन जाता हैं। साहित्य समाज का दर्प□ है, वेदों से लेकर आज तक समाज में नीति साहित्य अर्थात मानवी मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं। मूल्य शब्द- आवश्यकता, प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान, आदि विभिन्न अर्थों मे लिया जाता हैं। आज आधुनि□ □ाल में मनुष्य पुराणे विचारों को कालबाह्य मानकर उसे अस्विकृत करके नये नये मूल्यों □ी स्वी□ार □र रहा है।

प्रस्तावना-

मनुष्य का उत्कर्ष ही जीवन मूल्य की कसौटी हैं, उसके व्यवहार को ही जीवन मूल्य माना जाता है। प्रत्येक धर्म के कुछ नैतिक आदर्श होते हैं और उसके आधारपर ही समाज में अनेक मुल्यों का प्रचलन होता हैं। यही मूल्य मानवी जीवन को स्थायित्व देकर सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करते हैं।

□ोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित अमर कृति रामचरितमानस □ा भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान है। महर्षि वाल्मी□ी कृत रामायण में राम को एक वीर योद्धा के रूप में दिखाया परंतु तुलसीदास के राम सर्व शक्तिमान होते हुए मर्यादा पुरूषोत्तम है। रामचरितमानस हिंदी की एक महाण कृति है, साथ ही विश्वकी १०० सर्वश्रेष्ठ काव्य रचनाओं में ४६ वाँ स्थान है।

उच्च आदर्शो की प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठ मूल्यों का निर्माण तुलसीदास जी के मानस की विशेषता रही है। उन्होंने भारतीय वाङमय □ साररूप अमृतरस के समान भव्यतय आदर्शो और मूल्यों की प्रतिष्ठा की। उनके समकालीन तथा भविष्य के समाज के लिए इसकी विशेष आवश्यकता थी। तुलसीदास का रामचरितमानस वस्तुतः अपने आदर्शो □ लिए एवं श्रेष्ठतम मूल्यों के लिए पढा जाता है। तुलसीदास जी हिंदी साहित्य में एक नवीन आदर्श को लेकर अवतरित हुए क्योंकि □ोस्वामीजी के पहले हिंदी का कोई भी प्राचीन कवि इस □ेत्र में नहीं दिखाई देता।

विश्वमें मूल्य □ा प्रमुख स्त्रोत धर्म है और मूल्य का प्रारंभ परिवार से होता है! यहीं मूल्य एवं आदर्श निर्माण के लिए रामचरितमानस है । पारिवरिक आदर्श, भारतीय संस्कृति का चित्रण, दानवता पर मानवता की विजय आदि महत्व प्रतिपादित होता है । मानस में आदर्श की पूर्ण रक्षा पात्रों द्वारा हुई है । आदर्श गुरू, आदर्श माता-पिता, भाई, पत्नी, पुत्र, राजा, प्रजा, सेवक तथा आदर्श समाज का चित्रण मिलता है । आज रामचरित मानस में व्याप्त जीवन मूल्य को खोजना है तो पात्रों को देखना होगा क्योंकी प्रत्येक पात्र आदर्श है, मूल्यवान है ।

श्रीराम -

रामचरितमा-नस ा प्रधा-न पात्र राम है। वे नायक होने के कारण सर्वाधिक परिस्थितियों में होकर गुजरते हैं। संपू ा था-न इन्हीं के व्यक्तित्व के चारों ओर घुमता दिखाई देता है। राम अनंत सौंदर्य, शील, शक्ति, के साथ धीरता, गंभीरता, कोमलता आदि उदात्त गुणों का समावेश राम के व्यक्तित्व में किया गया है । यहीं उनका रामत्व है। राम की धीरता एवं गंभीरता का उदाहरण उस समय दिखाई देता है जब भरत चित्रकुट की ओर आते देखकर लक्ष्मण के मन की शंका उपस्थित करते हैं तो लक्ष्मण को समझाते हुए कहते हैं।

सु-हु लख्न भल भरत सरिसा। विधि प्रपंच महं सुना न दिसा।।
भरत ही होई न राज मद। विधि-हरि-हर पद पाइ ।।
बहुँ कि कांजी - सीकरनि छीर सिंधु बिनसाइ।।

श्रीराम का भक्तों को सबसे वश करनेवाला गुण है शरणागत की रक्षा। शरणागत ा र ा र-ना भारतीय संस्कृति और धर्म भाव-ना का बहुत बडा गुण माना जाता है। इसी कारण ही भारत की प्रसिद्धी समस्त संसार में रही है शरणागत की रक्षा यहाँ प्राण देकर भी की जाती है। विभीषण को अपनी शरण में आया देखकर राम कहते हैं f भलेही नि-शाचर है, शत्रु का भाई है परंतु मेरी शर ा अधिकारी है।

तुलसीदासजी ने राम के चरित्र ा सहनशील और धैर्यवान गुणोंसे चित्रित किया है ! यी की आज्ञा से व-न मे १४ वर्ष बिता-ना, समुद्रपर सेतु बनाने के लिए तपस्या करना, सीता को त्यागने के बाद राजा होते हुए भी सन्यासी की भांति जीवन बिताना उनकी सहनशीलता की पराकाष्ठा है ।

भगवान राम ने दया करके सभी को अपनी छत्रछाया में लिया। राम ा से-ना में पशु, मा-नव, दानव सभी थे और उन्होंने सभी को आगे बढने का मौका दिया। सु ाव ा राज्य दिया, हनुमान जांबवंत, -नल -नील, को भी उन्हों-ने समय समय पर नेतृत्व करने ा अधिकार दिया तात्पर्य यह है कि राम दयालु और बेहतर स्वामी है।

राम ने केवट सु ाव, निशादराज, विभीषण, हर जाति हर व ा मित्रों ा साथ करिबी रिश्ता निभाया है। दोस्तो के लिए उन्होंने स्वयं कई संकट झेले है।

भगवान राम के तीन भाई लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न सौतेली माँ के पुत्र थे लेकिन उन्होने सभी भाइयों के प्रति सगे भाई से बढकर त्याग और समर्पन का भाव रखा साथही स्नेह दिया ! यही वजह थी f भगवान राम के वनवास के समय लक्ष्मण उनके साथ वन गए और राम की अनुपस्थिति में राजपाट मिलने के बावजूद भरत ने भगवान राम के मूल्यों को ध्यान में र ार सिंहास-न पर भ ावा-न राम ा चरण पादुका रख जनता को न्याय दिलाया।

स्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में ऐसे चरित्रों का प्रस्तुतिकरण किया है जो आदर्श का निर्वाह शिष्ठाचार, शालीनता और मर्यादा का ध्यान रखते हैं रावण के चरित्र में भी मूल्यों का भंडार दिखाया है। वह महान तपस्वी है। अपनी बहन ा अपमान देखकर जान देनेवाला है और अपने आश्रय में रही पर स्त्री सीता को स्पर्श तक नहीं करता! रावन को एक आदर्श विरोधी ब-नाया है !

रामचरितमे सभी प्रकार के चरित्र निर्माण किए हैं जिसमें सात्वि राजस, तामस सभी गुणो के चरित्र मिलते हैं। राम, ल म, सीता, हनुमान, भरत, सुग्रीव, रावण आदि आदर्श चरित्र है।

नि ष र्ष :-

आज हम देखते है कि तुलसीदासजी ने अपने रामचरितमानस द्वारा उच्च मूल्य और चरित्र के प्रस्तुतीकरण से आदर्श का निर्वाह, शिष्ठाचार, शालीनता और मर्यादा का ध्यान रखा है। कदाचित ही अन्य किसी कवि ने इस लो मर्यादा मूल्य ओर ा ध्या-न दिया हो। यह सत्य है कि रामचरितमानस के पात्रों में यथार्थ की झलक अपेक्षाकृत कम है परंतु हमें यह समझ लेना चाहिए कि इस काव्य को पढने से हम जिंदगी की गंदगी से निकलकर खुली हवा में आना चाहते हैं अर्थात हमें आदर्श जीवन के मानदंड देने में समर्थ है। यही तुलसी की श्रेष्ठता ा ार है !

तुलसीदास जी ने रामचरितमा-नस द्वारा समाज को यह आश्वास-न दिया है ि राव का नाश आवश्य है। राम ा लोकमंगलकारी, समन्वयवादी, आदर्श, कालजयी तथा नानाविध आदर्श मूल्यों से युक्त चरित्र खडा करके भारतीय जनमानस से मूल्यों की इमारत खडी की है। यही कारण है कि भारतीय परिवार व्यवस्था दुनिया की संस्कृति में श्रेष्ठ है। परिवार के सभी आदर्श रामचरितमानस में विद्यमान है जैसे आदर्श पिता, माता, भाई, पत्नी, भाभी, सेवक,पुत्र, मित्र विरोधी आदि। स्पष्ट है कि पारिवारिक मूल्य से सामाजिक मूल्यों की धरोहर बनती है और समाज द्वारा देश की। यही मूल्य चिरंतन रखने के लिए दशरथ द्वारा कैकयी को दिया वचन आज भी सर्वश्रुत है !

रघुकुल की रीति चली आई। प्राण जाइ पर वचन न जाइ।।

संदर्भः-

१. रामचरितमानस - गीता प्रसे गोरखपूर
२. भारतीय संस्कृति महाकाव्यों के आलोक में - डॉ. देवराज
३. तुलसी मानस संदर्भ - रामस्वरूप आर्य
४. तुलसी संदर्भ और दृष्टि - डॉ.केशवप्रसाद
५. रामचरितमानस में समाज दर्शन - डॉ. विजयालक्ष्मी सिंह